Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

स्त्री अस्मिता और कथा-संवेदना: मनीषा कुलश्रेष्ठ और हेमन्दास राई की कहानियों का तुलनात्मक पाठ

मोहन महतो [1], डॉ विनोद कुमार [2]
[1] शोधार्थी, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब
[2] प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब

शोध सारांश:

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में स्त्री अस्मिता का विमर्श हिंदी और नेपाली साहित्य में एक केन्द्रीय स्थान ग्रहण करता है। यह विमर्श केवल स्त्री की शारीरिक पहचान तक सीमित न रहकर, उसके मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और जातीय संघर्षों को भी उकेरता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी की प्रतिष्ठित कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ तथा नेपाली साहित्य के सशक्त स्वर हेमन्दास राई की कहानियों के माध्यम से स्त्री अस्मिता और कथा-संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।इस शोध का प्रमुख उद्देश्य इन दोनों भाषाओं में स्त्री की स्थिति, संघर्ष और चेतना को समझना है विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में। मनीषा की कहानियाँ शहरी, शिक्षित, आत्मनिर्भर स्त्री की मानसिक ऊहापोह, विरोध और आत्मसंघर्ष को दर्शाती हैं; वहीं हेमन्दास की कहानियाँ ग्रामीण, वंचित, जातीय संदर्भों में स्त्री की मौन पीड़ा और सामाजिक घुटन की अभिव्यक्ति हैं। “केयर ऑफ़ स्वात घाटी”,“बौनी होती परछाई”,“गंधर्व गाथा” कहानी संग्रह एवं “किरदार” जैसी कहानियाँ स्त्री के आत्म-संघर्ष, पहचान-निर्माण और पितृसत्ता से संघर्ष की कहानियाँ हैं। दूसरी ओर “रातो टीका”, “माछा खाने मान्छेहरू” और “अभाव” जैसी नेपाली कहानियाँ स्त्री के जीवन में जातीयता, निर्धनता और परंपरा के दबाव को उजागर करती हैं। यह शोध तुलनात्मक साहित्य की पद्धति पर आधारित है, जिसमें कहानी के कथ्य, पात्र, भाषा, शिल्प और संवेदना के स्तर पर अध्ययन किया गया है। शोध से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों लेखकों की स्त्री पात्र भिन्न परिस्थितियों में जीती हैं, परंतु दोनों ही अपने-अपने स्तर पर प्रतिरोध और अस्मिता की रचना करती हैं। मनीषा की स्त्री पात्र विचार और भावनाओं के स्तर पर मुखर हैं, जबकि हेमन्दास की स्त्रियाँ सामाजिक संरचना से टकराते हुए चुपचाप प्रतिरोध करती हैं। यह अंतर केवल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि भाषिक और वर्गीय भी है।

बीज शब्द: स्त्री अस्मिता, कथा-संवेदना, सामाजिक यथार्थ, प्रतिरोध, तुलनात्मक अध्ययन, आत्म-निर्णय, लैंगिक समानता, भावात्मक सत्ता, संवेदनशीलता आदि

शोध का उद्देश्य:

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ और हेमन्दास राई की कहानियों में स्त्री अस्मिता के विविध रूपों का विश्लेषण।
2. सामाजिक संरचना में स्त्री की स्थिति पर कथाओं की दृष्टि का तुलनात्मक परीक्षण।
3. कथा-संवेदना और शिल्प की समानताएँ और भिन्नताएँ।

भूमिका:

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में साहित्यिक विमर्शों में स्त्री अस्मिता का प्रश्न अत्यंत प्रमुख होकर उभरा है। यह विमर्श केवल स्त्री की देह, प्रेम, विवाह या परिवार की सीमाओं में नहीं सिमटा है, बल्कि उसकी चेतना, अधिकार, प्रतिरोध और आत्म-निर्णय की आवाज़ बनकर प्रकट हुआ है। विशेष रूप से हिंदी और नेपाली साहित्य में इस कालखण्ड की कहानियाँ स्त्री के जीवनानुभवों को सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टियों से चित्रित करती हैं।हिंदी में मनीषा कुलश्रेष्ठ का कथा-साहित्य स्त्री जीवन की अनदेखी और अनकही परतों को संवेदना, प्रतिरोध और प्रतीकों के सहारे सामने लाता है। उनकी कहानियाँ स्त्री को नायिका नहीं, बल्कि 'प्रति-नायिका' के रूप में प्रस्तुत करती हैं जो स्वयं अपनी पहचान गढ़ती है। “केयर ऑफ़ स्वात घाटी”,“बौनी होती परछाई”,“गंधर्व गाथा” कहानी संग्रह एवं “किरदार”जैसी कहानियों में वह स्त्री को एक जीवंत, संघर्षशील और भावात्मक सत्ता के रूप में रचती हैं, जो पितृसत्ता के प्रतीकों को तोड़ती है। दूसरी ओर नेपाली साहित्य में हेमन्दास राई की कहानियाँ गाँव, जाति और वर्ग से घिरे स्त्री जीवन की दारुण स्थितियों को सामने लाती हैं। "रातो टीका" और "माछा खाने मान्छेहरू" जैसी कहानियाँ स्त्री के दमन को केवल लैंगिक ही नहीं, बल्कि जातीय और आर्थिक संदर्भों से भी जोड़ती हैं। उनकी लेखनी में स्त्री केवल पीड़िता नहीं, बल्कि मौन प्रतिरोध की वाहक भी है। आलोचक गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक के अनुसार, "हाशिए की स्त्रियों की आवाज़ को तब तक कोई अर्थ नहीं मिलता जब तक वे सत्ता द्वारा परिभाषित होती हैं।" मनीषा और हेमन्दास की स्त्रियाँ इस परिभाषा को तोड़ती हैं। उनके पात्र न तो त्याग की मूर्ति हैं और न ही केवल भोग्या – वे अपने निर्णय स्वयं करती हैं, भले ही परिणाम कष्टप्रद हो। सुसान फालुडी कहती हैं कि स्त्री विमर्श तब तक अधूरा है जब तक वह केवल देह या लैंगिकता तक सीमित हो। मनीषा की कहानियाँ स्त्री के आत्मिक संघर्षों को उजागर करती हैं, जबकि हेमन्दास की कहानियाँ उसकी भौतिक परिस्थिति की मार्मिक व्याख्या करती हैं।

तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में यह आवश्यक है कि एक ही विमर्श के भीतर भिन्न भाषाओं और संस्कृतियों की अभिव्यक्ति का तुलनात्मक अध्ययन हो। हिंदी और नेपाली दोनों ही साहित्य में स्त्री अस्मिता के विविध आयाम हैं एक ओर शहरी, शिक्षित, आधुनिक स्त्री की पीड़ा है, तो दूसरी ओर ग्रामीण, जातीय और आर्थिक संघर्षों से घिरी स्त्री की मूक प्रतिरोध की भाषा। यह अध्ययन इसीलिए महत्त्वपूर्ण है कि यह केवल स्त्री की पीड़ा को नहीं, बल्कि उसकी चेतना, उसकी भाषा और उसके विद्रोह को समकालीन कथा-संवेदना के माध्यम से विश्लेषित करता है। यह तुलनात्मक शोध एक साहित्यिक सेतु है, जो दो भाषाओं की स्त्रियों की आवाज़ों को एक साझा विमर्श में जोड़ता है।

मूल आलेख:

स्त्री अस्मिता से तात्पर्य उस चेतना, पहचान और आत्मबोध से है जो स्त्री अपने अस्तित्व, अनुभवों और अधिकारों के माध्यम से प्राप्त करती है। यह केवल स्त्री होने का जैविक या सामाजिक परिचय नहीं, बल्कि उसके अंदर की स्वायत्तता, स्वतंत्र निर्णय क्षमता और आत्म-मूल्यांकन का भाव है। साहित्यिक दृष्टि से यह विमर्श स्त्री के दमन, शोषण और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध उसके प्रतिरोध और आत्म-संघर्ष को उजागर करता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने स्त्री अस्मिता को विविध रूपों में प्रस्तुत किया है कभी आत्मद्रष्टा के रूप में, कभी विद्रोहिणी

के रूप में। समकालीन कथा साहित्य में यह अस्मिता केवल सामाजिक असमानता के खिलाफ संघर्ष नहीं, बल्कि आत्म-स्वीकृति, यौनिकता, मातृत्व, श्रम और संवेदना से जुड़े समस्त अनुभवों का समुच्चय बन गई है। इस प्रकार, स्त्री अस्मिता वह सशक्त भावभूमि है जहाँ स्त्री 'विषय' बनती है, केवल 'वस्तु' नहीं रहती। कहानी किरदार में "मैं उस किरदार को निभा रही थी, जिसे समाज ने मेरे लिए गढ़ा था, लेकिन अब मैं अपनी कहानी खुद लिखूँगी।" इसके माध्यम से मनीषा कुलश्रेष्ठ उस स्त्री की आकुलता को स्वर देती हैं जो समाज द्वारा आरोपित भूमिका (किरदार) को निभा रही है, लेकिन अब वह निष्क्रिय पात्र नहीं रहना चाहती। यह स्त्री अब कथानक की लेखक भी बनना चाहती है अपनी अस्मिता की सृजनकर्ता। यह कहानी स्त्री अस्मिता के उस रूप को उद्घाटित करती है, जहाँ एक औरत अपने पारिवारिक, सामाजिक और मानसिक बंधनों से संघर्ष करते हुए अपनी पहचान की पुनर्रचना करती है। उसका 'किरदार' बाहरी समाज ने बनाया था, लेकिन अब वह उसे अस्वीकार कर खुद की भूमिका को पुनर्परिभाषित करती है।इस सन्दर्भ में डॉ. शशिप्रभा कहती है: "स्त्री जब अपनी कहानी खुद लिखती है, तो वह केवल व्यक्ति नहीं, एक विचार बन जाती है।"

बौनी होती परछाई लेखिका कहती है: "वह जब आईने में खुद को देखती, तो लगता जैसे किसी और को देख रही हो... उसकी परछाईं भी अब पूरी नहीं रही थी, जैसे कोई उसे काट-काटकर छोटा करता जा रहा हो।" यह वाक्य स्त्री के भीतर के उस संकट को उभारता है जहाँ वह अपनी पहचान, आत्मविश्वास और गरिमा खो चुकी होती है। वह दूसरों की अपेक्षाओं और अपने रिश्तों के बोझ के नीचे दबकर अपना स्वत्व खो देती है। बौनी होती परछाई एक सशक्त प्रतीक बन जाता है ऐसी स्त्री का जो जीवित तो है पर पहचानविहीन, जो परछाईं के रूप में भी पूरी नहीं दिखती।

कहानी "पार उतरेगी लड़की" में कहती है "उसे बार-बार समझाया गया कि नदी पार करना लड़कियों के बस की बात नहीं, लेकिन उसने पहली बार अपने डर को पार किया और उतर गई बहाव में..." यह कहानी स्त्री के आत्मबल, जोखिम और अपनी राह खुद चुनने की आकांक्षा को चित्रित करती है। 'नदी पार करना' यहाँ एक रूपक है जीवन की कठिनाइयों, सामाजिक बंदिशों और मानसिक डर को पार करने का। नायिका का निर्णय स्त्री अस्मिता के सक्रिय और संघर्षशील पक्ष को सामने लाता है, जो अब मौन नहीं, बल्कि मुखर और निर्णायक है।इस सन्दर्भ में डॉ. अनामिका लिखती हैं: "यह कहानी स्त्री के भीतर की उस चुप विद्रोही शक्ति को उद्घाटित करती है जो पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देती है। यहाँ संवेदना सिर्फ करुणा नहीं, प्रतिरोध भी है।" यह कहानी स्त्री के आत्मबल, जोखिम और अपनी राह खुद चुनने की आकांक्षा को चित्रित करती है। 'नदी पार करना' यहाँ एक रूपक है जीवन की कठिनाइयों, सामाजिक बंदिशों और मानसिक डर को पार करने का। नायिका का निर्णय स्त्री अस्मिता के सक्रिय और संघर्षशील पक्ष को सामने लाता है, जो अब मौन नहीं, बल्कि मुखर और निर्णायक है।

हेमन्दास राई नेपाली कथा-साहित्य के समकालीन और सजग कथाकार हैं, जिनकी कहानियाँ समाज के हाशिये पर खड़ी स्त्रियों, दलितों और उपेक्षित वर्गों की संवेदना को स्वर देती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री अस्मिता का स्वरूप एक ओर पारंपरिक पितृसत्ता से जूझता हुआ दिखाई देता है, तो दूसरी ओर आत्मस्वीकृति और आत्मनिर्णय की आकांक्षा से भरा हुआ। उनके कहानी "गोठकी" में स्त्री अस्मिता के कई सन्दर्भ प्रस्तुत हुए है: "गोठकी को

सबने जानवरों के साथ जीने की आदत डलवा दी थी, पर वह भी सोचने लगी थी क्या मैं भी किसी दिन इंसानों के बीच रह सकती हूँ?" 'गोठकी' एक रूपक है उस स्त्री का, जिसे समाज ने 'अछूत' बना दिया है। वह न केवल जातिगत बल्कि लैंगिक उपेक्षा का भी शिकार है। जानवरों के बीच रहने वाली वह स्त्री जब सोचने लगती है कि क्या वह इंसानों की तरह जी सकती है, तब यह उसके अस्मिता-बोध का प्रारंभिक क्षण है। यह कहानी बताती है कि स्त्री के भीतर प्रश्न उठना ही बदलाव की शुरुआत है। इस सन्दर्भ में डॉ. तुलसी थापा इस कहानी पर लिखती हैं: "'गोठकी' नेपाली समाज में दोहरी सामाजिक परतों में जकड़ी स्त्री की अस्मिता की करुण परंतु सशक्त उद्घोषणा है।" कहानी गुमनाम चिट्ठी में नायिक कहती है: "उसने पहली बार किसी को बिना नाम के चिट्ठी लिखी यह वही चिट्ठी थी जिसमें उसका नाम भी था, उसकी चाहतें भी।" यह कहानी एक ऐसी स्त्री की है जो सामाजिक मर्यादाओं में रहते हुए भी अपने भीतर की संवेदनाओं और अस्मिता को लिखकर अभिव्यक्त करती है। बिना नाम की चिट्ठी लिखना, अपने लिए जगह बनाना है। यहाँ अस्मिता का स्वर आत्म-अभिव्यक्ति और आत्म-स्वीकृति के रूप में उभरता है। डा. सुवर्णा वाग्ले के अनुसार: "यह कहानी दिखाती है कि स्त्री की अस्मिता की लड़ाई सिर्फ बाहरी सामाजिक बंदिशों से नहीं, बल्कि अपने अंदर के मौन को तोड़ने से शुरू होती है।" हेमन्दास राई की कहानियाँ नेपाली ग्रामीण और सामाजिक यथार्थ में रची-बसी होती हैं, जहाँ स्त्रियाँ केवल परंपरा और दमन की शिकार नहीं हैं, बल्कि प्रतिरोध की बीजवती भी हैं। चाहे वह 'गोठकी' हो या 'गुमनाम चिट्ठी' की नायिका, दोनों ही स्त्रियाँ अपने स्वत्व की तलाश में हैं, और इसी तलाश में उनका अस्मिता-बोध निखरता है। कहानी सिर्जनामें लेखिका कहती है: "सिर्जना अब रचने लगी थी परिवर्तन, विरोध और अपनी पहचान; पहले वह केवल दूसरों के निर्णयों में शामिल होती थी, अब वह खुद को तय करने लगी थी।" 'सिर्जना' कहानी एक सांकेतिक रूप से स्त्री के भीतर की सर्जनात्मक चेतना की कथा है। यहाँ 'सिर्जना' नाम ही उसका भाग्य बन जाता है वह अपने भीतर से नए सामाजिक मूल्य, नई पहचान और एक नये जीवन की संरचना करती है। यह कहानी पितृसत्ता से मुक्त आत्मनिर्णय की आकांक्षा रखने वाली स्त्री को चित्रित करती है। सिर्जना न केवल अपने जीवन के ढांचे को तोड़ती है, बल्कि खुद को रचती है यही स्त्री अस्मिता का सक्रिय पक्ष है। इस सन्दर्भ में डा. गोविन्द रिजाल लिखते हैं: "'सिर्जना' उस स्त्री की कथा है जो अपनी सीमाओं को तोड़कर खुद को रचने का साहस करती है। यह आत्मनिर्माण की कथा है, न कि केवल सहनशीलता की।"

मनीषा कुलश्रेष्ठ स्त्री को केवल पीड़िता नहीं, संवेदना की वाहिका और प्रतिरोध की प्रतीक बनाती हैं। उनकी कहानियाँ भावना और विचार की गहराई से स्त्री विमर्श को समृद्ध करती हैं। मनीषा की स्त्रियाँ पारंपरिक भूमिका से विद्रोह करती हैं। वे अपने शारीरिक, मानसिक और सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाती हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री के अनुभवों को अस्मिता, स्वतंत्रता, यौन-चेतना, सामाजिक द्वंद्व और आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ जोड़ती हैं। पानीगाथा में नायिका कहती है: "हमारे लिए पानी सिर्फ प्यास बुझाने की चीज़ नहीं था, यह सम्मान था, अस्तित्व था, अस्मिता थी।" यह कथन स्त्री की अस्मिता को प्रतीकात्मक रूप से "पानी" के रूप में प्रस्तुत करता है। कहानी की नायिका दलित समुदाय से है और समाज के दोहरे मापदंडों के बीच अपनी पहचान की लड़ाई लड़ती है। यह कहानी स्त्री-दलित अस्मिता के दोहरे संघर्ष को उठाती है, जहाँ वह न केवल पुरुष सत्ता बल्कि जातीय व्यवस्था से भी जूझती है। किरदार कहानी में कहती है: "मैं अपनी देह को किरदार नहीं बनने दूँगी किसी और की कहानी का।" यहाँ मनीषा देह और स्त्री अस्मिता के बीच द्वंद्व को उठाती हैं। स्त्री को

हमेशा किसी अन्य की कथा में 'किरदार' बना दिया गया है वह अपने लिए नहीं, दूसरों की कल्पनाओं में जीती है। यह कहानी स्त्री के आत्मनिर्णय और यौन स्वतंत्रता की माँग को दर्शाती है। बदलता हुआ रंग में नायिका कहती है:"रंग सिर्फ त्वचा पर नहीं, रिश्तों पर भी चढ़ते हैं। कभी जाति का, कभी जेंडर का।" यह भाव यह स्पष्ट करता है कि स्त्री को सिर्फ शरीर के रंग से नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं के रंगों से भी परखा जाता है। यह कहानी जाति, वर्ग और लिंग जैसे विभेदों में फंसी स्त्री अस्मिता की लड़ाई को उजागर करती है। मधु कांकरिया के अनुसार: "मनीषा की कहानियाँ स्त्री अस्मिता को सिर्फ भावनात्मक स्तर पर नहीं, राजनीतिक और सामाजिक संरचना के भीतर समझने की कोशिश करती हैं।" रेखा सेठी के शब्दों में "मनीषा का कथा-संसार स्त्री की आवाज़ को उसकी संपूर्ण संवेदनात्मक शक्ति के साथ प्रस्तुत करता है। उनकी स्त्रियाँ जटिल, बहुआयामी और यथार्थ के बहुत करीब हैं।"

हेमनदास राई नेपाली समकालीन कथा-साहित्य के एक महत्वपूर्ण नाम हैं, जो समाज के हाशिए पर खड़ी आवाज़ों को केंद्र में लाकर प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री अस्मिता, जातीय द्वंद्व, पारिवारिक विघटन और सामाजिक अन्याय जैसे विषयों पर गहराई से विमर्श करती हैं। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ केवल पीड़िता नहीं, बल्कि सचेत, संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत होती हैं। फूलन देवी में स्त्री प्रतिरोध: "उनी केवल बलात्कृत महिला थिइनन्, उनी विद्रोहकी प्रतिमूर्ति बनिन्।" "वह केवल एक बलात्कृत स्त्री नहीं थीं, वह विद्रोह की प्रतिमूर्ति बनीं।" यह कहानी भारतीय दलित वीरांगना फूलन देवी के जीवन पर आधारित है, जिसे नेपाली संदर्भ में रूपांतरित किया गया है। इसमें स्त्री अस्मिता केवल शारीरिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। यह कथा स्त्री प्रतिरोध के वैश्विक विमर्श को नेपाली समाज में लाकर प्रस्तुत करती है। प्रो. गोविन्दराज भट्टराई के शब्दों में: "हेमनदास राई की कहानियाँ स्त्री को मौन नहीं, मुखर बनाती हैं। उनकी स्त्रियाँ सामाजिक असमानता की दीवारें तोड़ने वाली योद्धा हैं।" हेमनदास राई की कहानियाँ नेपाली समाज में स्त्री की पारंपरिक छवि को तोड़ती हैं। उनकी नायिकाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक रूढ़ियों से जूझते हुए एक नई स्त्री अस्मिता की रचना करती हैं। ये कहानियाँ स्त्री को केवल करुणा का पात्र नहीं बनातीं, बल्कि उसे संघर्ष और प्रतिरोध की चेतना से युक्त करती हैं।

निष्कर्ष:

मनीषा कुलश्रेष्ठ और हेमनदास राई की कहानियाँ स्त्री अस्मिता के संघरसंवेदनशील और सशक्त रूप को समकालीन संदर्भों में प्रस्तुत करती हैं| दोनों रचनाकारों की स्त्रियाँ पीड़िता नहीं, संघर्षशील चेतनाएँ हैं जो अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ती हैं। मनीषा की स्त्री जहाँ भीतर से टूटी हुई होकर भी आत्मनिर्णय की शक्ति अर्जित करती है, वहीं हेमनदास की स्त्री सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह करती है। इन लेखकों की नायिकाएँ प्रेम, देह, विवाह, जाति, धर्म और सत्ता के मानदंडों पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती हैं। मनीषा की कहानियों में देह एक सत्ता है, जिसे स्त्री अपने लिए पुनः प्राप्त करना चाहती है। पानीगाथा में पानी सिर्फ प्यास बुझाने का साधन नहीं, बल्कि दलित स्त्री अस्मिता का प्रतीक बनकर उभरता है। वहीं किरदार की स्त्री यह तय करती है कि वह किसी और की कथा में 'किरदार' बनकर नहीं जिएगी। हेमनदास की कहानी रातो टीका में टीका केवल श्रृंगार नहीं, स्त्री के सामाजिक अस्तित्व का स्वीकृति-पत्र बन जाता है। उनकी कहानी फूलन देवी में स्त्री प्रतिरोध का

वह उग्र रूप देखने को मिलता है जो सत्ता से सीधा टकराता है। इन दोनों रचनाकारों में स्त्री केवल भावनात्मक नहीं, वैचारिक स्तर पर भी सशक्त होती दिखाई देती है। वे परंपरा से टकराती हैं, उसे तोड़ती हैं, और एक नई पहचान रचती हैं। मनीषा की स्त्रियाँ देह के भीतर आत्मा खोजती हैं, जबकि हेमनदास की स्त्रियाँ आत्मा के लिए सामाजिक न्याय माँगती हैं। मनीषा का लेखन शहरी, बौद्धिक और अंतरमन के द्वंद्व को टटोलता है। हेमनदास का लेखन ग्रामीण, जातीय और सांस्कृतिक बंधनों की शृंखला को तोड़ने का प्रयास करता है। स्त्री अस्मिता की लड़ाई दोनों लेखकों में अलग संदर्भों से आती है, पर उसका मूल स्वर एक ही है – स्वतंत्रता और सम्मान। मनीषा के यहाँ स्त्री देह पर पुरुष दृष्टि का वर्चस्व एक सघन चिंता का विषय है। हेमनदास के यहाँ स्त्री देह पर सामाजिक और धार्मिक अधिकार के सवाल उठते हैं। दोनों रचनाकार स्त्री को एक स्वायत्त इकाई के रूप में स्थापित करते हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री विमर्श को नए स्वर, नई गहराई और नया संदर्भ प्रदान करती हैं। ये कहानियाँ 'अस्मिता' को केवल बौद्धिक विमर्श नहीं रहने देतीं, बल्कि उसे जीवन-संघर्ष में बदल देती हैं। मनीषा की भाषा संवेदनशील और गद्य-कविता के मध्य की शैली में बहती है। हेमनदास की भाषा संक्षिप्त, कठोर और प्रतीकों में रची-बसी होती है। दोनों लेखकों की कथा-प्रस्तुति पाठक को भीतर तक झकझोरती है। इनकी कहानियों में स्त्री अपनी आवाज़ को खोजती नहीं, उसे गूंज में बदल देती है। मनीषा की स्त्री अपनी देह के माध्यम से अपने आत्मा की तलाश करती है। हेमनदास की स्त्री आत्मा के ज़रिए अपने शरीर को पुनः परिभाषित करती है। ये दोनों दृष्टियाँ एक-दूसरे की पूरक हैं। इनकी कहानियाँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि स्त्री अस्मिता कोई एकरेखीय विषय नहीं, बल्कि जटिल सामाजिक संरचना की उपज है। मनीषा का स्त्री-विमर्श निजी से सार्वजनिक की ओर जाता है। हेमनदास का स्त्री-विमर्श सार्वजनिक से व्यक्तिगत की तह में उतरता है। मनीषा की स्त्री प्रेम में भी विद्रोह खोज लेती है। हेमनदास की स्त्री विद्रोह में भी करुणा का स्थान छोड़ती नहीं। इनकी स्त्रियाँ भाषा, प्रतीक और चुप्पी को हथियार बनाती हैं| वे पितृसत्तात्मक व्यवस्था को अपने तरीकों से चुनौती देती हैं। उनके पात्र सामाजिक व्यवस्था से संवाद करते हुए भी उससे टकराते हैं। मनीषा की स्त्रियाँ आत्मालोचन से शक्ति ग्रहण करती हैं। हेमनदास की स्त्रियाँ सामूहिक स्मृति और अपमान से ऊर्जा अर्जित करती हैं। दोनों की स्त्रियाँ कोई काल्पनिक आदर्श नहीं, बल्कि यथार्थ की कठोर जमीन पर खड़ी हैं। वे आंसुओं से नहीं, आग से बनी हैं। वे अपनी देह, भाषा, परंपरा और धर्म से मोल-तोल करना जानती हैं। इन कहानियों की स्त्रियाँ 'पीड़िता' की छवि को ध्वस्त करती हैं। वे निर्णय लेने वाली, अपने लिए लड़ने वाली स्त्रियाँ हैं। इनका जीवन ही अस्मिता का आख्यान बन जाता है। स्त्री के भीतर की स्त्री को बाहर लाने का यह अद्भुत साहित्यिक यत्न है। ये कहानियाँ हमें संवेदना से नहीं, साहस से भर देती हैं। मनीषा और हेमनदास की कहानियाँ सीमाओं को चुनौती देती हैं। इनमें स्त्री अस्मिता कोई विमर्श नहीं, जिंदा अनुभव है। यह अनुभव हमें भीतर से झकझोरता है, और सोचने को बाध्य करता है। इस तरह दोनों लेखकों का साहित्य स्त्री अस्मिता का एक प्रामाणिक, वैचारिक और सशक्त स्वरूप हमारे सामने रखता है।

संदर्भ सूची:

1. राई, हेमनदास। *रातो टीका.* काठमाडौं: नेपथ्य प्रकाशन, 2019.
2. माछा खाने मान्छेहरू. समालोचना, 2016.

3. कुलश्रेष्ठ, मनीषा। *पानीगाथा.* राजकमल प्रकाशन, 2016.
4. भट्टराई, गोविन्दराज। *समकालीन नेपाली कथा विमर्श.* काठमाडौं: विद्या बुक्स, 2020।
5. बस्नेत, सुभद्रासिंह। "*नेपाली कथा साहित्यमा स्त्री अस्मिता: हेमनदास राईको दृष्टिकोण।*" आधुनिक साहित्य, खंड 22, अंक 4, 2022, पृष्ठ 45–52।
6. पाण्डे, अनिता। *नेपाली नारी कथा: प्रतिरोध र पुनर्निर्माण.* ललितपुर: जनपथ प्रकाशन, 2023।
7. कांकरिया, मधु. नई कहानी की नई नारी. राजकमल प्रकाशन, 2019.
8. चौहान, नीलिमा। स्त्री विमर्श और समकालीन कहानी। वाणी प्रकाशन, 2021.
9. सेठी, रेखा. "स्त्री अस्मिता के नवीन स्वर: मनीषा कुलश्रेष्ठ के सन्दर्भ में।" समयिक साहित्य पत्रिका, खंड 17, अंक 2, 2022.
10. कान्त, मीरा. *स्त्री विमर्श और कथा साहित्य.* वाणी प्रकाशन, 2016.
11. कुमार, शशिप्रभा. *भारतीय स्त्री विमर्श के आयाम.* प्रभात प्रकाशन, 2017.
12. चौहान, सरोजिनी. *हिंदी कथा में स्त्री स्वर.* राजपाल एंड सन्स, 2019.
13. त्रिपाठी, रेखा. *स्त्रीवाद और समकालीन हिंदी कहानी.* भारतीय ज्ञानपीठ, 2020.
14. जैन, इला. *हिंदी कथा में स्त्री विमर्श.* वाणी प्रकाशन, 2018.
15. धमला, सञ्जीव. *समकालीन नेपाली साहित्य र समाज.* काठमाडौं विश्वविद्यालय, 2019.
16. शर्मा, मीनाक्षी. "स्त्री लेखन में संवेदना की अभिव्यक्ति: मृणाल पांडे और मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों के विशेष संदर्भ में।" *समकालीन भारतीय साहित्य*, खंड 36, अंक 3, 2015.
17. शर्मा, संगीता. "हिंदी और नेपाली कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण।" तुलनात्मक *साहित्य समीक्षा*, खंड 12, अंक 1, 2019.
18. द्विवेदी, विश्वनाथ प्रसाद. *प्रमाणिक हिंदी शब्दकोश.* भारतीय भाषा परिषद, 1985.
19. मिश्र, हरदेव बाहरी. *शब्दार्थ कोश.* लोकभारती प्रकाशन, 1992.
20. मेहरा, गिरिजाशंकर. *समांतर कोश:* हिंदी थिसॉरस. राजपाल एंड सन्स, 2006.